PROF. (DR) RUKHSANA PARVEEN
HOD, DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
R.R.S. COLLEGE MOKAMA

CLASS – BA PART- I (H), PAPER - II

HYSTERIA – CAUSES AND SYMPTOMS

हिस्टीरिया (Hysteria) की कोई निश्चित परिभाषा नहीं है। बहुधा ऐसा कहा जाता है, हिस्टीरिया अवचेतन अभिप्रेरणा का परिणाम है। अवचेतन अंतर्द्वंद्र से चिंता उत्पन्न होती है और यह चिंता विभिन्न शारीरिक, शरीरक्रिया संबंधी एवं मनोवैज्ञानिक लक्षणों में परिवर्तित हो जाती है। रोगलक्षण में बह्य लाक्षणिक अभिव्यक्ति पाई जाती है। तनाव से छुटकारा पाने का हिस्टीरिया एक साधन भी हो सकता है। उदाहरणार्थ, अपनी विकलांग सास की अनिश्चित काल की सेवा से तंग किसी महिला के दाहिने हाथ में पक्षाघात संभव है।

अधिक विकसित एवं शिक्षित राष्ट्रों में हिस्टीरिया कम पाया जाता है। हिस्टीरिया भावात्मक रूप से अपरिपक्व एवं संवेदनशील, प्रारंभिक बाल्यकाल से किसी भी आयु के, पुरुषों या महिलाओं में पाया जाता है। दुर्लालित एवं आवश्यकता से अधिक संरक्षित बच्चे इसके अच्छे शिकार होते हैं। किसी दु:खद घटना अथवा तनाव के कारण दौरे पड़ सकते हैं।

लक्षण

रोग के लक्षण बड़े विस्तृत हैं। एक या एक से अधिक अंगों के पक्षाघात के साथ बहुधा पूर्ण संवेदनक्षीणता, जिसमें सुई अथवा चाकू से चुभाने की अनुभूति न हो, हो सकती है। अन्य लक्षणों में शरीर में अस्पष्ट ऐंठन (हिस्टीरिकल फिट) या शरीर के किसी अंग में ऐंठन, थरथराहट, बोलने की शक्ति का नष्ट होना, निगलने तथा श्वास लेते समय दम घुटना, गले या आमशय में 'गोला' बनता, बहरापन, हँसने या चिल्लाने का दौरा आदि है। रोग के लक्षण एकाएक प्रकट या लुप्त हो सकते है पर कभी कभी लगातार सप्ताहों अथवा महीनों तक दौरे बने रह सकते हैं। युद्धकाल में ऐसे रोगी भी पाए गए जो कुछ समय के लिए अथवा जीवनपर्यंत अपने को भुल गए हैं।

कुछ मामलो मे अत्याधिक बोलना और गाली-गलौज करना भी इसी रोग का लक्षण है।

उपचार

हिस्टीरिया का उपचार संवेदनात्मक व्यवहार, पारिवारिक समायोजन, शामक औषधियों का सेवन, सांत्वना, बहलाने, पुन शिक्षण and counseling से किया जात है। समय समय पर पक्षाघातित अंगों के उपचार हेतु शामक ओषधियों तथा विद्युत् उद्दीपनों की भी सहायता ली जाती है। रोग का पुनरावर्तन प्राय: होता रहता है।

यह एक मानसिक रोग है जो की रोगी को अचेत अवस्था में ले जाता है | इसे एक मानसिक अवसाद भी कहा जा सकता है और आमतौर पे यह महिलाओं को होता है | या फिर ये उन पुरुषो को भी होता है जो कोमल स्वाभाव के होते है | आप इसे एक डर भी कह सकते है जो दिमाग में बुरी तरह से बैठ जाता है और इससे रोगी को दौरे पड़ने शुरू हो जाते है | आइये जानते है इसके कारण लक्षण |

इसके कारण -

तनाव - यह तनाव की वजह से भी होता है और आमतौर को इंसान जरूरत से ज्यादा तनाव लेता है तो उनके दिमाग की नसे आपस में बुरी तरह से उलझ जाती है और यह रोग होने लग जाता है | अपनी सुरक्षा को लेकर तनाव या फिर किसी अन्य चीज का तनाव इसकी मुख्य वजह है |

कमजोर व्यक्तित्व - अगर आपने कोई ऐसे भयावह घटना देखी जो आपके मन में घर कर गई और बुरी तरह से बैठ गई तो आपको ये रोग हो सकता है | कोई काम ना होना , बहुत अधिक भयानक चीज , घर में कोई बहुत बड़ा संकट आदि इस की वजह है | जो लोग कमजोर ह्रदय या मन के होते है उन्हें यह रोग जल्दी पकड़ता है | इसीलिए यह महिलाओं में होता है क्योकि आमतौर पे महिलाएं पुरुषो से अधिक कोमल स्वाभाव की होती है |

हिस्टीरिया के लक्षण -

अचेत हो जाना - अचानक से अचेत हो जाना और बेहोशी की हालत में आ जाना इस रोग का सबसे बड़ा लक्षण है | अचानक से रोगी बेहोश हो जाएगा और उसकी आँखे खुली रहेगी

और दांत भीच लेगा , इसके अलावा उसकी साँसे सही से चलती है | कुछ देर बाद रोगी स्वतः ही ठीक हो जाएगा और उसके शरीर में कमजोरी रहेगी |

दम घुटना - रोगी रह रह के उलटी साँसे लेने लगता है और उसका दम घुटता है | जल्दी जल्दी साँसे चलना और रोगी का अपना गला और छाती पकड़ना इसके लक्षण है | इस दौरान रोगी कई बार उठकर भागने भी लगता है और कुछ अजीब तरीके की हरकते करना लगता है |

आवाज निकलना बंद हो जाना - कई बार तो रोगी चीखता है लेकिन अधिकतर केसेस में रोगी की आवाज निकलनी बंद हो जाती है और वो बिलकुल शांत हो जाता और इस दौरान उसकी आँखे खुली रहती है | कई बार रोगी की आँखे बंद हो जाती है और वो पूरी तरह से चुप हो जाता है | अगर सही समय में इलाज नहीं मिलता तो यह झटका एक दिन में दस बार भी आ सकता है और रोगी की मृत्यु भी हो सकती है |

दौरे पड़ना - दौरे पड़ना इसका सबसे बड़ा लक्षण है और इससे ही रोगी की पहचान की जाती है | दिन में कई बार दौरे पड़ना या फिर किसी चीज को देखकर एक दम शांत और चुपचाप हो जान रोगी के लक्षण है |

हिस्टीरिया का कोई पुख्ता इलाज नहीं है आप रोगी की प्यार से रखे और उसके मन को मजबूत बनाने का प्रयास करे |